दिलीप चिंचालकर

बसन्त के मेले में पांगर (कोरल), ततैया और छोटा बसन्ता

प्रकृति का रोड-शो जो साल भर चलता है, फिर से शुरू हो चुका है। इसके तीन अंग होते हैं – गर्मी, बरसात और सर्दी। कहीं-कहीं अभी पतझड़ खत्म नहीं हुआ है। पिछले साल का आखिरी अंग सिमट रहा है। फिर भी ज़्यादातर जंगल, बाग-बगीचों में वसन्त की सरगर्मी शुरू हो चुकी है। वैसे भारत में बसन्त कम और गर्मी ही ज़्यादा होती

छोटा बसन्ता

है। जब छोटा बसन्ता (कॉपरस्मिथ) बर्तन पर टीचे (कुक-कुक) लगाने लगे, मान लेना चाहिए कि खुशनुमा मौसम आ गया है। जिस दिन मौसम साफ हो और हवा में गर्माहट हो, यह पक्षी पत्तों की आड़ में छुपा पनचक्की की तरह कुक-कुक-कुक करने लगता है।

एक बुलबुल को छोड़ दें तो लगता है कि सुरीला गाने वाले शायद सारे पक्षी शर्मीले होते हैं। कोयल जाने क्यों छिपकर ही इतना मीठा गाती है? पीलक या ओरिओल इतना ज़र्द पीला होता है मानो आज ही हल्दी लगी हो उसे। पीपल के लहलहाते पत्तों के पीछे छुपकर गाना उसका स्वभाव है। लेकिन छोटा बसन्ता तो इतना रंगीन और बनाठना रहता है कि दिख जाए तो नज़र ही लग जाए।

इन दिनों लग रहे प्रकृति के मेले में पलाश और पांगर (कहीं-कहीं पर इसे गधा पलाश भी कहा जाता है) की दुकानें सबसे ज़्यादा आकर्षक हैं। पलाश तो शहर में कम ही दिखाई देता है परन्तु पांगर की रौनक कुछ ऐसी है कि राह चलते इंसान भी पेड़ के नीचे बिछी सुर्ख लाल पंखुड़ियाँ देखकर ठिठक जाएँ। पेड़ पर पत्ता एक नहीं। हर फुनगी पर पाँच डंडियों वाले एंटिना निकल आए हैं जिन पर लाल फूलों की आतिशबाज़ी हो रही है। भौंरे, मधुमक्खियाँ, शकरखोरा आ-आकर फूलों का रस पी रहे हैं। मैना, तोते, फुदकी और कई प्रकार के पक्षी टहनियों पर शोर मचा रहे हैं। वैलेंटाइन

पांगर या कोरल

दिवस पर किसी कॉफी हाउस में क्या चहल-पहल होगी जितनी अभी पांगर पर है।

चमकदार नीले रंग का शकरखोरा दिखता हमिंगबर्ड जैसा है परन्तु है नहीं। हमिंगबर्ड सिर्फ उत्तर और दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है। कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के दो छात्र क्रिस्टोफर क्लार्क और टेरेसा फो दूरबीन लेकर एना के हमिंगबर्ड के पीछे पड़े थे। उनका ध्यान एक अजूबी बात पर गया। और वह यह कि हमिंगबर्ड के चहकने की आवाज़ अपने पंखों से निकालता है। इस मौसम में अपनी सखी को रिझाने के लिए यह हवा में कलाबाज़ियाँ दिखाता है। पहले तो आकाश में ऊँचाई पर जाता है फिर 50 मील प्रति घंटा की रफ्तार से नीचे की ओर छलाँग लगाता है। हवा झनझनाते हुए उसकी दुम के पंखों में से होकर गुज़रती है और पपैया-सी बजने लगती है।

खिड़की से झाँककर बाहर बगीचे में देखो। पेड़-पौधे, पक्षी और कीट-पतंगे कुछ न कुछ कारगुज़ारी में लगे दिखाई देंगे। हो सकता है कि तुम्हारी खिड़की के छज्जे में ततैया छत्ता बना रही हो। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला के कमरे के बाहर भी ततैयों का छत्ता था। कई बार वे उन्हें काट भी चुकी थीं। मंडेला कहते हैं कि इन प्राणियों का भी पृथ्वी पर उतना ही हक है जितना हमारा है। जब हमारा व्यवहार उन्हें समझ में नहीं आता वे हमें काट लेती हैं। हम तो समझदार हैं ना इसलिए उन्हें तंग न करें। अब इतनी-सी समझदारी दिखाने के लिए क्या हमें राष्ट्रपति बनने की ज़रूरत है? चकमक

कहावतों की कहानियाँ

मुर्गे की एक ही टाँग होती है

जब कोई सरासर झूठ बोलकर उसे सही साबित करने की कोशिश करे।

कोई बावर्ची अपने मालिक के लिए खाना पकाकर लाया। उसमें मुर्गे की एक ही टाँग थी। एक टाँग बावर्ची ने चुपचाप खा ली थी। मालिक ने पूछा, "इसकी दूसरी टाँग कहाँ गई?" बावर्ची ने जवाब दिया, "हुजूर! मुर्गे की सिर्फ एक ही टाँग होती है।" संयोगवश किसी दिन एक मुर्गा कूड़े के ढेर पर एक टाँग से खड़ा था। बावर्ची ने मुर्गे की ओर इशारा करके कहा, "हुजूर! एक टाँग के मुर्गे को देखिए।" जब मालिक ने ताली बजाई, तो मुर्गे ने झट दूसरा पैर ज़मीन पर रख दिया और बावर्ची से कहा, "देख, इसके दोनों पैर हैं कि एक?" इस पर उसने जवाब दिया, "हुजूर! ताली बजाने से दो पैर दिख पड़े। अगर उस समय भी आपने ऐसा किया होता, तो दूसरा पैर ज़रूर सामने आ जाता।"